14-2-68 प्रातःक्लास ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बच्चों प्रित रूहानी सावधानी भी देते हैं कि अपन को संगमयुगी समझो। सतयुगी तो नहीं समझेंगे। तुम ब्राहमण ही अपन को संगम युगी समझेंगे और तो सभी अपन को कलियुगी ही समझेंगे। बहुत फर्क है ना। सतयुग और कलियुग। या स्वर्गवासी और नर्कवासी। तुमतो न स्वर्ग वासी हो न नर्क वासी हो। तुम हो ही पुरुषोत्तम संगम युग वासी। इस संगम युग को तुम ब्राहमण ही जानते हो। और कोई नहीं जानते। तुम भल जानते हो फिर भी भूल जाते हो। अभी मनुष्यों को कैसे समझावें। बनारस का समाचार भी बच्चों ने सुना। वह सभी हैं कलियुगी गुरु। उन्हों के जंजीरों में सभी भक्त फंसे हुये हैं। गोया रावण के जंजीरों में फंसे हुये हैं। रामराज्य तो है नहीं। रावण को ही जलाते रहते हैं। तो इससे सिध होता है रावण का राज्य है। रामराज्य क्या है, रावण राज्य क्या है यह भी तुम ही जानते हो। सो भी नम्बरवार। बाप आते ही हैं संगम युग पर। तो यह भेट होती है सतयुग और कलियुग की। कलियुग को नर्कवासी, सतयुग को स्वर्गवासी कहा जाता है। स्वर्गवासी को पावन, नर्कवासी को पतित कहा जाता है। तुम्हारी तो बात ही निराली है। तुम तो इस पुरुषोत्तम संगम युग को जानते हो। समझते हो हम ब्राहमण हैं। बर्णो वाला चित्र बाबा के पास है नहीं। बाबा ने दो चार बारी मुरली में चलाया है कि यह चित्र यहां होना चाहिए। सुनते भी हैं मधुबन में यह चित्र चाहिए। परन्तु इतना दूरनदेशी, विशाल बुधि न होने कारण वह काम करते ही नहीं। यह ईशारा तोमिलता है ना। बनाने वाले दिल्ली और बम्बई है। परन्तु विशाल बुधि न है। इन पर तुम अच्छी तरह समझाये सकते हो। यह विराट रूप का चित्र भी 6×4 का होना चाहिए। बच्चे छोटे बच्चे हैं तो छोटे2 चित्र मांगते रहते हैं। माडल्स बनावेंगे, गुड्डियां बनावेंगे, मिट्टी की मूर्तियां बनावेंगे। जैसे छोटे बच्चे गुड्डियों से खेल करते हैं ना। कई बच्चे भी अभी कि बेबी बुधि हैं। गुड्डियां बनावेंगे, मिट्टी की मूर्तियां देखी तो खरीद करेंगे। समझते हैं इससे शोभा होती है। अरे शोभा सारी है समझाने की। न कि चित्रों आद की। बच्चों को डायरेक्शन भी मिलती है एक तो इन माडल्स, गुड्डियों आद से दिल को हटा दो। मुख्य है हां समझाने का बात। भेट दिखानी चाहिए। अक्षर भी बड़ी फर्स्ट क्लास हो। बच्चे लिटरेचर आद में बहुत झूंझार अक्षर लिखते हैं। बाबा ने फर्न छपवाने के लिए भेजी, लिख दिया कागज भी बड़ा हो, सफल हो, अक्षर भी बड़े हो। बाबा को झूंझार अक्षर बिलकुल पसन्द नहीं आता। फिर भी झूंझार बुधि झूंझार अक्षरों में बनाये भेज दिये। अरे बाबा ने बड़े अक्षर लिखा था। कह देते हैं बाबा आई एम सारी। जैसे कोई अखबार में उल्टा-सुल्टा डालते हैं इनसल्ट करते हैं फलाना ऐसा है, इन पर केस चलता है फिर भी कह देते हैं आई एम सारी। बुलास। पत्थर लगाया आई एम सारी। यह सब बातें यहां होती है। सतयुग में यह सब बातें कब होती नहीं। अब मनुष्य अपन को नर्कवासी पतित कंगाल, बिमार कैसे समझे इसके लिए कम्पेरीज़न बनाना चाहिए। लिखना चाहिए- - "अब पुरानी दुनिया है या नई दुनिया? यह पुरानी कलियुगी दुनिया है या नई सतयुगी दुनिया। सिर्फ कलियुग अक्षर से भी मनुष्य समझेंगे नहीं। सतयुग स्वर्ग नई दुनिया है या कलियुग नर्क पुरानी दुनिया है। तुम नर्कवासी हो या स्वर्गवासी हो। तुम पतित हो या पावन हो। तुम देवता हो या असुर हो। सतयुग के निवासी हो या कलियुग के निवासी हो? सतयुग के निवासी स्वर्ग के निवासी हो या कलियुग निवासी नर्क के निवासी हो? ऐसे2 तो कोई कब नहीं कहेंगे हम स्वर्ग के निवासी हैं। कई मनुष्य समझते हैं हम तो स्वर्ग में ही बैठे हैं। अरे यह तो नर्क है ना। सतयुग है ही कहां। रावण राज्य है तो तुम रावण को मारते रहते हो। उन्हों के पास भी बहुत जवाब होते हैं। सर्वव्यापी की ही बात पर कितनी डिबेट करते हैं। यह तो तुम बिलकुल क्लीयर पूछ सकते हो। अभीनई दुनिया है या पुराना दुनिया? कैम्पेरीज़न बनाना चाहिए। सेन्सीबुल बच्चे एक मोहन है, और जगदीश है, बहुत कर के किताब आद यह दोनो ही छपाते रहते हैं। शोभा हो बनावेंगे। यह लिखने में बड़ी अच्छी ब्रेन चाहिए। तो ऐसा लिखना चाहिए। जो मनुष्य अपने से पूछे। मैं नर्कवासी हूं या

स्वर्गवासी हूं? यह पुरानी दुनिया है या नई? यह पतित दुनिया है या पावन। कैम्पैरीज़नपूरा आना चाहिए। यहराम राज्य है या रावण राज्य है। हम पुरानी कलियुग दुनिया के निवासी हैं या नई सतयुगी दुनिया के निवासी हैं? पतित दुनिया के निवासी हैं या पावन दुनिया के निवासी हैं? हिन्दी में ऐसी2 बातु सब लिख कर फिर अंग्रेजी, गुजराती में ट्रान्सलेट करते रहे। तो मनुष्य अपने से पूछे मैं नर्कवासी हूं या स्वर्गवासी हूं? अभी उपाध्याय भरा कहते हैं स्वर्गवासी हुआ। अब स्वर्ग है कहां? अभी तो कलियुग है। जरूरपुनर्जन्म भी यहां ही लेंगे। स्वर्ग तो सतयुग को कहा जाता है। वहां अभी कैसे जावेंगे। दो दुनियाएं थोड़े ही हैं। तो यह बड़ी विचार सागर मंथन करने की बातें हैं। बाबा बच्चों को ऐसे (निबन्ध) देते हैं। पूरी रीत अक्षर लिख कर आओ। ऐसी क्लीयर कैम्पैरीज़न हो जो हरेक मनुष्य अपने से पूछे। उस में लिख दो भगवानुवाच। हरेक मनुष्य अपने आप से पूछे कि हम सतयुगी राजराज्य का निवासी हूं या कलियुगी रावण राज्य का निवासी हूं? पूरे अक्षर हों। मैं पावन दुनिया का निवासी हूं या पतित दुनिया का निवासी हूं। ऐसे 2 विचार सागर मंथन कर लिखते जाओ। फिर बाबा कैसेट कर भेज देंगे। "भगवान कहते हैं आप से आप से पूछो- - -हम सतयुगी स्वर्ग वासी हैं या कलियुगी नर्कवासी हैं? तुम ब्राह्मण तो हो संगम युग वासी। तुमको तो कोई जानते ही नहीं हैं। तुम हो सब से न्यारे। तुम सतयुग और कलियुग को यथार्थ रीति ~~जानते~~ जानते हो। तुम लिख सकते हो दैवी गुणों वाले मनुष्य हो या आसुरी गुणों वाले मनुष्य हो। विकारी भ्रष्टाचारी मनुष्य हो या निर्विकारी श्रेष्ठाचारी मनुष्य हो? यह कैम्पैरीज़न में लिखना बहुत जरूरी है। तुम्हारा यह किताब बहुत बिकेंगे। सन्यासी लोग भी अपने से पूछेंगे हम सतयुगी स्वर्ग वासी हैं या कलियुगी नर्कवासी हैं? स्वर्ग तो सतयुग को ही कहेंगे। तुम कलियुगी पतित हो या सतयुगी पावन? यह किताब बहुत अच्छा छपावेंगे। ऐसा भी कर सकते हैं उनको काले अक्षरों में और उनको गोल्डेन अक्षरों में लिखो। नई2 बातें निकालनी पड़े ना। जो कि मनुष्य समझें। ईश्वर सर्वव्यापी हैं इस बात पर बहुत पक्के हैं। अब तुम्हारी लिखते देख आपे ही अपनेअन्दर से पूछेंगे। इनको आपरन एज तो सभी कहेंगे सतयुगी डीटी राज्य तो इनको कह न सकेंगे। तो यह लिखना चाहिए। हैल या हैविन? ऐसी फर्स्ट - क्लास लिखते हो जिससे मनुष्य समझें बरोबर हम सतयुगी तो हैं नहीं। हमारे में वह दैवीगुण ही नहीं। बाबा ऐसे (निबन्ध) देते हैं फिर आपे ही विचार सागर मंथन कर पार्टन्ट निकालो। जितने भी निकालें। तो मनुष्य देखने से ही फट से समझ जावेंगे हम तो बरोबरनर्कवासी पतित हैं। विषस हैं। तुम सतयुगी पावन हो या कलियुग पतित? अभी तोकलियुगत्र है ना। सतयुग तो कलियुग में हो न सके। ऐसा कैम्पैरीज़न का किताब बनाओ। बहुत अच्छा हो। बड़े2 अक्षर हों। तुम यह सारा लिखो तो बाबा तुम्हारे नाम पर किताब छपावेंगे। मधुबन-निवासियों ने यह बनाया है। फिर भेज देंगे कि तुम सिर्फ इसको छपाओ। तुम्हारा नाम होगा। मधुबन निवासियों ने यह किताब निकाला है। भल वह लोग भी कोशिश करें। जो ओटे सो अर्जुन। जो विचार सागर मंथन कर बनावेंगे वही अर्जुन। गीता में भी अर्जुन का नाम दिया है ना। बाप कहते हैं यह जो गीता है उन में अंटे में लून है। पहले नम्बर में लूण, कृष्णभगवानुवाचः लिख दिया है। लुणऔर खण्ड में कितना फर्क है। वह मीठा वह खारा। कृष्णभगवानुवाचः डाल खारा कर दिया है। मनुष्य दुवण = दुवण में फंस पड़ते हैं भक्ति मार्ग है भी दुवण मार्ग। विचारों को ज्ञान का जरा भी पता नहीं है। भगवानुवाच है। यह तो कब भी भूलना न चाहिए। परन्तु माया ऐसी दूस्तर है जो भूला देती है। नाटक भी बहुत सहज है जो भगवान देते हैं। फिर भी भूल जाते हैं। टीचर को ही भूल जाते हैं। स्टुडन्ट कब टीचर को भूलते हैं क्या? घड़ी2 कहते हैं बाबा हम भूल जाते हैं। बाप कहते हैं माया कम नहीं है। तुम देहाभिमानी बन पड़ते हो। बहुत विकर्म बन जाते हैं। ऐसा कोई दिन खाली नहीं जो विकर्म न होते हों। एक मुख्य विकर्म यह करते हो, बाप फरमान करते हैं मनमनाभव। अपने को आत्मा समझो। मानते नहीं हो तो विकर्म नहीं होगा तो और क्या होगा। पाप बहुत हो

जाते। बाप का फरमान नहीं मानते हैं ना। बाप का फरमान बहुत सहज भी है तो बहुत कड़ा भी है। कितना भी माथा मारे फिर भी भूल जावेंगे। क्योंकि आधा कल्प का देहाभिमान है ना। 5 मिनट भी यथार्थ याद में नहीं बैठ सकते। अभी अगर बैठ जावें तो कर्मातीत अवस्था हो जावें। हां बाबा इन में बैठ तुमको मदद देते हैं। बाप ने समझाया है पढ़ाई तो तुम वह जिस्मानी भी पढ़ते हो, हिस्ट्री, जागरफी आद पढ़ने की प्रेक्टीस है। बाकी याद की यात्रा का बिलकुल अभ्यास नहीं है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना यह नई बात है। विवेक कहते हैं ऐसे बाप को बहुत अच्छी रीत पकड़ना चाहिए। रोटी-टुकड़ खाने के लिए थोड़ा टाईम निकाल बाकी तो हम क्यों न इस याद में रहें तो हम पावनबन जावेंगे। बहुत बच्चे हैं जिनके पास इतने पैसे हैं जो ब्याज़ मिलता रहे बाप को याद करते रोटी टुकड़ खाते रहे, बस। परन्तु माया करने न देती। कल्प पहले जिसने जो पुरुषार्थ किया है उतना ही करेंगे। टाईम लगता है। कोई दौड़ी पहन पहुंच जाये यह हो नहीं सकता है। इसमें दो बाप है। बेहद के बाप को तो अपना शरीर है नहीं। वह इन में प्रवेश हाकर बात करते हैं। तो श्रीमत पर चलना चाहिए ना। जरूर बाप ने श्रीमत तो दी होंगी ना। बच्चों को यही कहा होगा देह के सभी धर्म को छोड़ आ अपने को नंगा समझो। तुम नंगे पवित्र आये थे। फिर 84 जन्म लेते2 तुम्हारी आत्मा पतित बनी है। अब पावन बनने लिए श्रीमत पर चलो तो हम प्रेन्टी करता हूं तुम्हारे पाप कट जो जावेंगे। तुम्हारी आत्मा कंचन बन जावेगी। जो इस कुल का बनने वाला होगा वह तुम्हारी बातों को सुन कर सोच में पड़ जावेंगे। कहेंगे आप की बात तो ठीक है। पावन बनने लिए बाप को याद करना पड़े। और तो कोई तकलीफ नही। पावन बनना है। किसको दुःख न देना है। मनसा वाचा कर्मणा पवित्र बनना है। मनसा में तूफान मल आये पर कर्मणा में नही आना है। तूफान तो बहुत आवेंगे। तुम बेहद की बादशाही लेते हो ना। तुम भल सच्च बताओ न बताओ बाप खुद कहते हैं तुमको बहुत विकल्प आवेंगे। कर्म-इन्द्रियों से कुछ करना न हैं। मनसा में आने से तुम्हारा कोई पाप नहीं होगा। डिसचार्ज आद होती है यह पाप नहीं है। कर्म-इन्द्रियों से पाप न करना है। तो तुम यह लिखो जो मनुष्यों को पता पड़े। हम कहां हैं। हम सतयुग सतोप्रधान है या कलियुग तोप्रधान है? यह सब अक्षर छोटे2 की लिखनी चाहिए। वर्णों का चित्र भी जरूर होना चाहिए। इन चित्रों आद बनाने भी ठीक न बहुत अच्छी चाहिए। शिव के चित्र में इतनी लिखत की दरकार नहीं हैं। कोई पढ़ भी सके। कृष्ण पूरे 84 जन्म लेते हैं, और शिव पुनर्जन्म नही लेते हैं। वह सर्व गुण सम्पन्न देवता है, यह तो है ही बाप। थोड़े ही अक्षर बस है। बाकी इतने ढेर झूंझार अक्षर कौन पढ़ सकेंगे? तुम ने देखा है पाण्डवों के चित्र कितने बड़े2 हैं। बेवकुफ थे क्या। जो इतने बड़े चित्र बनाये हैं। इनका मतलब है यह इतने बड़े विशाल बुधि थे। उसकी बुधि उन्हों ने फिर शरीर को बड़ा बना दिया है। तुम्हारी जैसी विशाल बुधि और कोई की न हो सके। तुम्हारी तो ईश्वरीय बुधि है ना। भक्ति मार्ग में कितने बड़े2 चित्र बैठ बनाये हैं। पैसे ही सब बरबाद कर देते हैं। कितने वेद-शास्त्र उपनिषद आद हैं। कितना खर्चा आद होता है। बाप कहते हैं तुम कितने पैसे गंवाते आये हो। बेहद का सब को डोरापा देते हैं। अभी तुम फील करते हो बरोबर बाबा ने तो पैसा बहुत दिया हुआ। राजयोग सिखा कर राजाओं का राजा बनाया। बैरिस्टरी पढ़ कर बैरिस्टर बनता है तब केस उठाते हैं। फिर कमाई होती है। इसलिए ही कहा जाता है नालेज ईज सोर्स ऑफ इनकम। यह भी ईश्वरीय पढ़ाई है ना। यह पढ़ाई भी सोर्स ऑफ इनकम है। जिससे बेहद की बादशाही मिलती है। भगवद रामायण आद उन में कुछ नालेज नहीं हैं। सब आबजेक्ट कुछ भी नहीं। नालेजफुल बाप बैठ तुम बच्चों को समझाते हैं। यह हैं बिलकुल नई पढ़ाई। वह भी पढ़ाते कौन है? भगवान नई दुनिया के मालिक जाने वाले ही पढ़ाते हैं। यह लक्ष्मी नारायण भी बहुत पढ़े हैं तब तो ऊंच पद पाया है। कुछ राजा कहां रईयत। अभी टाईम पड़ा है। कोई की तकदीर खुल जाये तो बेड़ा पार है। स्टुडन्ट समझ सकते हैं हम पढ़ते और औरों को पढ़ा सकते हैं वा नहीं। पढ़ाई पर जोर रखना चाहिए।

पत्थर बुधि होने कारण कुछ समझते नहीं हैं। तुमको बनना है सोने की बुधि। वह उनके बनेंगे जो सर्विस में रहेंगे। बाप समझाते हैं वैज भी तुम्हारे पास है। कोई को भी समझा सकते हो। बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। भारत स्वर्ग था ना। कल की ही बात है। कहां 5000 वर्ष की बात कहो लाखों वर्ष कह देते हैं। कितना फर्क है। तुम किसको समझाओ भी परन्तु बिलकुल ही पत्थर बुधि हैं। अगर खुद समझते हो तो दूसरों को भी समझाने का पुरुषार्थ करो। यह वैज ही तुम्हारे लिए जैसे कि गीता है। इसमें सारी पढ़ाई है। मनुष्यों को गीता नाम सुनने से भक्ति मार्ग की गीता याद आ जाती है। उनसे तो दुर्गति को ही पाते हैं। इसलिए उनको झूठी कह देते हैं। और अभी बाप द्वारा सुनने से तुम 21 जन्म सदगति को पाते हो। मनुष्यों की गीता सुनने से 63 जन्म दुर्गति को पाते हो। शुरू 2 में तुम ने ही गीता पढ़ी है। पूजा भी तुमने ही शुरू की है। गीता पढ़ते2 क्या हाल हुआ है। अब पुरुषार्थ कर गरीबों को ही भक्ति मार्ग के जंजीरों से छुड़ाना है। गुरु लोग तो कब नहीं आवेंगे। उन्हों के जंजीरों में जो हैं उनको निकालो। तुम भी उन्हों के जंजीर से निकले हो ना। तुम्हारे गुरु लोग थोड़े ही आये हैं। जैसे रमेश और उमा का गुरु कितना नामी-गामी है। उनके यह दोनो ही नम्बरवन स्टुडन्ट थे। दोनो ही बड़े होशियार थे। उनका यह जैसे राईट हैंड। इस तरफ आ गये। अब उनको समझाते हैं वह समझता थोड़े ही हैं। बनारस वाले कटर दिखाई पड़ते हैं। कुछ भी बुधि में बैठा नहीं। अगर किसी= किसी के बुधि में बैठा भी हो तो कुछ कह न सके। नही तो यह सब बिगर पड़े। अब क्या करना चाहिए। जो कुछ उनमें समझते थे उनको कुछ पकड़ना चाहिए। गुरु लोग तो अपनी राजाई नहीं छोड़ेंगे। कोई न कोई को उठाते रहो। एक दो घर के निकलेंगे। कोशिश कर के अगर5-6 आते हैं तो एक एक से अलग फार्म भरायेअलग समझाना चाहिए। नहीं तो उन में एककुआ होगा तो और को भी खराब करेंगे। कम से कम फार्म तो जरूर अलग2 भराओ। एक दो को देखे भी नहीं। इकट्ठे कब नहीं समझ सकेंगे। इसलिए अलग फार्म भराना बहुत जरूरी है। यह सब युक्तियां चाहिए तब ही तुम सफलतासम्पन्न हो सकते हो। जब बहुत उन्हों के जंजीर से निकल आवे तब ही कुछ समझे। बाबा भी बड़ा व्यापारी है ना। जो होशियार होंगे वह अच्छा व्यापार करेंगे। वह तो तुमको घाटे में डाल देते हैं। बाप कितना फायदे में ले जाते हैं। झूण्ड आये तो बोलो फार्म अलग।2 भरना है। अगर सभी रिलीजिस माईन्ड हैं तो इकट्ठा बिठाना चाहिए। पूछना चाहिए गीता पढ़े हो। देवताओं को मानते हो। बाबा ने कहा था भक्तों को ही सुनाना। हमारे भक्त और देवताओं के भक्त। जो जल्दी समझेंगे। युक्तियां बहुत चाहिए समझाने की। बोलो यहां का कायदा है फार्म भराने का। तुमको भराना हो तो भरो। नहीं तो चले जाओ। एक एक से फार्म भराने के लिए अलग2 कोठरी चाहिए। नहीं तो कहना चाहिए आधा घंटा बाद आना। पत्थर को पारस बनाना मासी का घर थोड़े ही है। देहाभिमान कड़ी है कड़ी बहुत गन्दी बिमारी है। देहाभिमान जब तक टूटा न है तो सुधरना बड़ा ही मुश्किल है। इस में पूरा नारायणी नशा चढ़ा हुआ होना चाहिए। जो नंगे आये थे नंगे जाना है। यहां क्या रखा है। बाप ने कहा है मुझे याद करो। इसमें ही मेहनत है। बड़ी मंजिल है। चलन से मालूम पड़ जाता है। यह अच्छे मददगार बनेंगे कल्प पहले मिशल। अच्छा बच्चों को याद प्यार गुड मार्निंग। नमस्ते।

डायरेक्शनः- बापदादा कहे शिव जयन्ति पर सभी रूहानी बच्चों को गन्धेरी(गन्ना(ईख)के टूकड़े)सभी को खिलाना है और दूसरी टोली हरेक सेन्टर वाले आपस में जो राय निकाले हरेक अपनी2 टोली मिल-जुल खाये और मधुवन में हरेक सेन्टरसमाचार भेजे। भेजे। अच्छा।

(2) ल0ना0 के चित्र 30×40साईज़ के बम्बई में छप गई है। इन चित्रों का स्टाक बम्बई, देहली, कलकत्ता और बैंगलोर भेजा गया है। जिनको भी चित्र चाहिए तो, इन सेन्टरों से जो नज़दीक हो वहां से मंगा सकते हैं। चित्र बहुत अच्छी है। बाकी सीढ़ी के चित्र अजन छप रहे हैं। छप कर तैयार होने से डायरेक्शन लिख देंगे। अच्छा अब विदाई लेते हैं।।

-:****ओमशान्तिः-****:-